Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

"Representation of the 'Banality of evil' in Indian Cinema and Web-Series"
"भारतीय सिनेमा और वेब-सीरिज़ में 'Banality of evil' ('बुराई की साधारणता')"

पल्लवी
सहायक प्रोफेसर
डिपार्टमेन्ट ऑफ फ़ॉरेन लेंग्वेज
तेजपूर यूनिवर्सिटी, असम

सारांश

इस लेख में 'बुराई की साधारणता' को दृश्य-विधान के जरिये से समझने की कोशिश की गयी है. हाल में आई फिल्म Article 15 (2019) और दो वेब-सीरीज पाताल-लोक (2020) और मिर्ज़ापुर -2 (2020) में बुराई के पक्षधर पात्रों के माध्यम से 'बुराई की साधारणता' पर बात की गयी है.

संदर्भ: *वेब सिरीज़, ओटिटी, सिनेमा, दृश्य, पात्र*

आमुख

हन्नाह अरेण्ड्ट अपनी किताब *Eichmann in Jerusalem: A Report on the Banality of Evil* (1963) में **"Banality of Evil" ('बुराई की साधारणता')** की व्याख्या 'होलोकॉस्ट' के सन्दर्भ से करती हैं. आरेण्ड्ट लिखती है कि हज़ारों यहूदियों की हत्या करने का आदेश देने वाला अडोल्फ आईखमान बाहर से आया कोई दानव या शैतान नहीं है. आरेण्ड्ट से अनुसार अडोल्फ आईखमान हमारी आपकी तरह एक आम इंसान है, लेकिन उसके साथ ऐसा क्या हुआ कि उसने हज़ारों यहूदियों की हत्या करने का आदेश दिया?

आईखमान के ऊपर 1961 में जेरुसलेम में ट्रायल चलाया गया था और 1962 में उसे यहूदियों के विरुद्ध और मानवता के विरुद्ध अपराध को अंजाम देने का दोषी ठहराया गया. उसी साल उसे फांसी दे दी गयी थी. इस ट्रायल के दौरान आईखमान अपने पक्ष में ये दलील देता है कि वह बस आदेश का पालन कर रहा था. अरेण्ड्ट इसकी व्याख्या इस बचाव का विश्लेषण करते हुए सवाल पूछती हैं कि किस बात या विचार ने आईखमान को लोगों को मारने का आदेश पालन करने के लिए प्रतिबध्द किया? आरेण्ड्ट लिखती है कि कोई शैतानी ताक़त नहीं, बल्कि उसके अंदर "कल्पनाशक्ति का ना होना" ("lack of imagination"), उसकी "सच्चाई से अनभिज्ञता" ("remoteness from reality") और "विचारहीनता" ("thoughtlessness")[1] जघन्य अपराध को अंजाम देते हैं. आईखमान के अंदर सकारात्मक चीजों को लेकर एक उदासीनता है और मानवता और मानवीय होने प्रति उदासीनता और अनभिज्ञता उसे एक अंतरात्मारहित इंसान में तब्दील कर देने की ताकत रखता है. आरेण्ड्ट के लिए आईखमान एक आम और साधारण मानव ही हैं, जिसके अंदर बुराई है.

[1] Hannah Arendt 1963: 134

इस लेख में 'बुराई की साधारणता' को दृश्य-विधान के जरिये से समझने की कोशिश की गयी है. हाल में आई फिल्म *Article 15* (2019) और दो वेब-सीरीज *पाताल-लोक* (2020) और *मिर्ज़ापुर -2* (2020) में बुराई के पक्षधर पात्रों के माध्यम से 'बुराई की साधारणता' पर बात की गयी है.

***Article 15* (2019), *पाताल-लोक* (2020) एवं *मिर्ज़ापुर-2* (2020)**

"How many roads must a man walk down,
Before you call him a man?"

फिल्म ***Article 15*** की शुरुवात बॉब डिलन के उपरान्कित इस बेहद प्रशिद्ध गाने से होती है. साठ के दशक में इस गाने को प्रतिवाद की अभिव्यक्ति के तौर पर खूब गाया और सुना गया. वही साठ का दशक जब कई देशों में छात्र आंदोलन अपने जोर पर था. तारिक़ अली अपनी आत्मकथा *Street Fighting Years. An Autobiography of the Sixties* (1987) में लिखते हैं कैसे लोग "vulture capitalism" के खिलाफ सड़कों पर उतर आये थे और कैसे युवाओं ने कई पुराणपंथी सामाजिक व्यवस्ता को बदल कर रख दिया था. आज, यानि पचास सालों बाद भी इस गाने की प्रासंगिकता बनी हुई है. गाने की शुरुवात एक सवाल से होती है: "How many roads must a man walk down, Before you call him a man?" यह एक वक्रपटूता है. इस सवाल का जवाब फिल्म के एक बेहतरीन दृश्य में गुंथा हुआ है, जब अयान रंजन का किरदार पुलिस स्टेशन से सामने वाली सड़क पर चलता है और उसके चमचमाते जूते के नीचे से गंदगी और कचड़े का अम्बार गुजरता है. कैमरे का फोकस कई सेकण्ड्स तक कचड़े पर होता है. इसी सीन में अयान कचड़े पर चलता हुआ फोन पर अदिति से बातें कर रहा है. वह अपने प्रेम से अपनी निराशा बाँट रहा है. एक तरफ प्रेम और दूसरी तरफ गंदगी। दोनों ही कंट्रास्ट है, एक दूसरे से विपरीत। ऐसी ही कहानी फिल्म के दूसरे युवा किरदार निषाद की है. अयान के तरह उसने किसी प्रतियोगी परीक्षा को पास करने के बाद जिम्मेदारी नहीं ली है. एक दलित और जिए गए सत्य के मार्फ़त वह क्रांति का रास्ता चुनता है. वह यह जानता है की पीढ़ियों से चली आ रही असमानता को खत्म करने में पीढ़ियां लग जायँगी। वह क्रांति का रास्ता चुनता है, क्यूंकि उसके भी पैरों के तले से ज़िंदगी का नाला बह रहा है. निषाद और अयान में एक फर्क ये है कि निषाद के पैरों में अयान की तरह चमचमाते जूते नहीं है. दोनों में समानता ये है कि दोनों ही इस गंदगी को साफ़ कर एक समतामूलक न्यायोचित समाज की कल्पना करते हैं. दोनों को ही गंदे नाले से गुजरना ही होगा ताकि साफ़ सड़क बन सके, वैसी ही साफ़ सड़क जो बॉब डिलन के गाने में स्क्रीन पर दीखता है.

फिल्म विधा के दृष्टिकोण से फिल्म के कई पहलुओं पर चर्चा की जा सकती है. केंद्रीय मुद्दा है - दलित बच्चियों के साथ यौन हिंसा, उनकी हत्या और मृत शरीर को पेड़ पर लटकाना। इस तरह की हिंसा का "दृश्य-विधान अपने आप में एक विवादस्पद विषय है. खास कर यौन हिंसा की घटना का चित्रात्मक वर्णन भी किया जाता रहा है. गेस्पेर नॉए (Gasper Noé) की फिल्म *Irréversible* (2002) में सिर्फ यौन-हिंसा का दृश्य लगभग 9 मिनट का है और एक स्त्री के उत्पीड़न को बारिकी से चित्रात्मक रूप से

परोसा गया है. दृश्यरति के चश्मे से फिल्माया गया यह फिल्म यौन हिंसा पर बात करने की वजाय इस मुद्दे को सनसनीखेज़ बनाता है. *Article 15* में एक जिम्मेदारी भरा निर्देशन देखने को मिलता है. हिंसा के कारणों को केंद्र में रखकर इसके इर्द गिर्द जो ताना बाना बुना है वो वर्तमान भारत की एक ऐसी तस्वीर पेश करती है, जो दर्शकों को चौंकाने की वजाये सोचने पर मज़बूर करती है.

बच्चियों के मृत शरीर को पेड़ पर लटकाने का क्या उद्देश्य रहा होगा ? क्या यह बतलाना कि "देखो, हम कितने ताकतवर है?" प्राचीन ग्रीक लेखक सोफोक्लस का नाटक *एन्टीगॉने* में थेब्स का नया राजा क्रेऑन निर्णय लेता है कि उसके विरोधी पोलीनेइस के मृत शरीर का सम्मान नहीं किया जायेगा और लोगों के लिए एक उदहारण स्थापित करने के उद्देश्य से पोलीनेइस के मृत शरीर को युद्ध के मैदान में बिना दफनाए चील कौवों के लिए छोड़ दिया जायेगा। किसी को दण्डित करने की यह एक प्राचीन विधि है, जो दक्षिण एशिया में आज भी अस्तित्व में है. खास कर यौन हिंसा के पीड़ित/उत्तरजीवी को कभी नंगे परेड करवाना, उसके जिस्म पर दूसरे धर्म के चिन्ह गोद देना, उसके मृत शरीर को क्षत-विक्षत कर देना या उस शरीर को पेड़ पर लटका देना इत्यादि। *एन्टीगॉने* नाटक में *एन्टीगॉने* का किरदार क्रेऑन के आदेश के खिलाफ जाकर अपने भाई पोलीनेइस के मृत शरीर को दफ़नाकर उसका सम्मान करता है. क्रेऑन इस बात के लिए *एन्टीगॉने* को मारने का आदेश देता है. अयान और निषाद वर्तमान समय के एन्तिगॉने हैं जो ये जानते हुए भी कि सत्य और न्याय की तलाश में उनकी जान तक जा सकती है, फिर भी वो सत्ता और बाहुबल से जा टकराते हैं. वर्तमानं समय की वास्तविकता के इस वीभत्स पहलू को *Article 15* काल्पनिक ताने बाने में बुनकर दर्शकों को उससे रूबरू करवाता है. कला का मक़सद यहाँ सफल होता दीखता है.

फिल्म में ब्रह्मदत्त का किरदार उसी कचड़े और गंदे नाले का व्यक्तिकरण है, जो आयन और निषाद के पैरों के नीचे से बह रहा है. जाति और सत्ता का दंभ पाले ब्रह्मदत्त न केवल अपराध को अंजाम देता है, बल्कि तमाम न्यायिक प्रणाली को ठेंगा दिखाता है. उसमें और सीबीआई ऑफिसर के किरदार पानिकर में एक ताल मेल है- एक अपराध करेगा और दूसरा उसे बचाएगा। यही ताकत है ब्रह्मदत्त की. दर्शकों को दोनों ही किरदार के चेहरे के हाव भाव को बारीकी से दिखाया गया है. दोनों के ही चेहरे पर पश्चाताप का एक तिनका तक नहीं दिखता है. जूलिया क्रिस्टेवा अपनी किताब *Powers of Horror* (1980) में ऐसे ही अपराधियों के सन्दर्भ में 'abject' ('घृणा') शब्द का इस्तेमाल करती है, जिसका अर्थ होता है अंतरात्मारहित अपराधी। कुत्तों के प्रति लगाव रखने वाला किरदार ब्रह्मदत्त एक आम इंसान ही है, कहीं बाहर से आया हुआ शैतान नहीं। उसके जैसे किरदार इसी समाज में बनते हैं. ब्रह्मदत्त उतना ही आम है जितना हज़ारों यहूदियों को मारने वाला अडोल्ड आईखमान था. फिल्म में ब्रह्मदत्त को कुत्तों को खाना खिलाते और उनकी परवाह करते दिखाया जाता है. अमूमन यह माना जाता है कि जानवरों के प्रति सहृदयता दिखाने वाले लोग अच्छे होते हैं और यह एक सामान्य जीवन की सामान्य बात है, जो इस दृश्य के जरिये दर्शकों तक संप्रेषित होती है. ब्रह्मदत्त द्वारा किया गया अपराध इस सामान्य के अंदर पल रही

बुराई का परिचायक है. अपने द्वारा किये गए अपराध को वह सामान्य मानता है, इसलिए भी उसे डर नहीं है. इस प्रक्रिया में वह अपने अंदर की बुराई को सामान्य बना रहा है. ब्रह्मदत्त के लिए नाबालिग बच्चियों के साथ बलात्कार करना और कुत्तों को खाना खिलाना, ये दोनों ही बातें सामान्य है.

फिल्म में ब्रह्मदत्त और पानिकर का काल्पनिक किरदार आईखमान के वास्तविक किरदार के बहुत करीब है. हालाँकि उनके द्वारा किये गए अपराध अपने आप में बहुत अलग है, लेकिन तीनो ही किरदार में अपने कृत्य को लेकर कोई पछतावा नहीं है. ऐसे किरदार अपराध करने और उसे छुपाने के लिए डर के भाव का इस्तेमाल करते हैं. ब्रह्मदत्त सबको डराता है कि अगर ज्यादा परतें खुली तो सबकी जान पर खतरा होगा। उसके द्वारा फैलाया यही 'डर' असल में ब्रह्मदत्त की ताकत है. ब्रह्मदत्त वही है जो हमें जीवन के हर मोड़ पर हमारे अंदर के डर को हवा देता है. वह डर का बीज हमारे अंदर ऐसे बोता है कि आने वाली कई पीढ़ियों में डर व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है. यही हमारे समय की 'सबसे उदास कविता' है.

पाताल-लोक का पात्र विशाल उर्फ़ हथौड़ा त्यागी का कुत्तों के लिए प्रेम और लगाव ही इस वेब सीरीज का क्लाइमेक्स है. जैसे महाभारत में युधिस्थठिर अपने कुत्ते के बगैर स्वर्ग में जाने से मना कर देता है, वैसी ही प्रतिबद्धता कत्लेआम करने वाला हथौड़ा त्यागी कुत्तों और उनके प्रति प्रेम रखने वालों के लिए दर्शाता है. विशाल त्यागी का किरदार समाज में व्याप्त हिंसा के फलस्वरूप विशाल से हथौड़ा त्यागी बन जाता है. गाँव का एक साधारण बच्चा हिंसा के प्रतिउत्तर में खुद हिंसक हो जाता है. वह लोगों को बीभत्स तरीके से मारे में पारंगत हो जाता है और यही उसका पेशा भी बन जाता है. हथौड़ा त्यागी ब्रह्मदत्त के किरदार से अलग है, क्यूंकि उसे उसकी परिस्थियों और समाज ने हिंसक बनाया है. वह समय के साथ बुराई का प्रतीक तो बन जाता है लेकिन उसके अंदर एक अच्छे इंसान होने के भी बीज मौजूद हैं. दर्शक इस अच्छे बीज को उस दृश्यों के माध्यम से समझता है, जब-जब स्क्रीन पर हथौड़ा त्यागी को कुत्ते के प्रति प्रेम भाव प्रदर्शित करते दिखाता है. हथौड़ा त्यागी में बुराई है, नृशंसता है, पर वह ब्रह्मदत्त और आईखमान के चरित्र से अलग है. दर्शकों को उसके अंदर की बुराई साधारण और नार्मल नहीं प्रतीत होती है, बल्कि अच्छाई के बीज दर्शकों में उसके प्रति एक समझदारी पैदा करती है. हथौड़ा त्यागी के अंदर सोच और कल्पनाशक्ति दोनों हैं. "सच्चाई से अनभिज्ञता" के बजाये उसके अंदर सच्चाई के प्रति जागरूकता है, लेकिन वह इस जागरूकता को प्रतिशोध में तब्दील कर देता है और हिंसा के प्रतिउत्तर में खुद एक अंतरात्मा रहित इंसान में तब्दील होता चला जाता है. उसके अंदर का एक कतरा मानव दर्शकों को अपने प्रति उदासीन नहीं होने देता है. इसलिए भी हथौड़ा त्यागी एक जटिल चरित्र है- बुराई और अच्छाई का मिश्रण, जिसमें बुराई का नमक ज्यादा और अच्छाई की मिश्री थोड़ी कम है.

मिर्जापुर-2 में किरदार सत्यानन्द त्रिपाठी उर्फ़ बाउजी की नृशंश हत्या बीना त्रिपाठी जब एक धारदार डरावनी औजार से करती है तो दर्शकों में बाउजी के मरने को लेकर एक संतोष महसूस हो सकता है. बुराई के ख़त्म हो जाने का यह संतोष ग्लानिपूर्ण भी हो सकता है. बीना द्वारा बाउजी के अंग अंग को

छिन्न भिन्न कर मारने से बीना का प्रतिशोध पूरा होता है, क्यूंकि बाउजी अपनी बहु बीना को ब्लैकमेल कर उसका बलात्कार करता है. *मिर्ज़ापुर-2* के स्त्री-पात्र बीना और पाताल-लोक के पुरुष पात्र हथौड़ा त्यागी में ज्यादा अंतर नहीं है. दोनों का हिंसक व्यवहार उनके साथ हुई हिंसा का उत्तर है. बीना के पात्र को एक दृश्य में मातृत्व का सुख लेते हुए दिखाया जाता है और अगले ही दृश्य में कैमरा का फोकस उसके हाथ में लिए धारदार औजार पर होता है. दृश्यों का यही कंट्रास्ट बीना के पात्र को जटिल बना देता है.

मिर्जापुर-2 का बाउजी का किरदार 'प्योर ईविल' ('pure evil') यानि बुराई का प्रतीक है, जो *Article 15* के ब्रह्मदत्त के किरदार के जैसा है. बाउजी के किरदार में न ही सोच और ना हीं कल्पना है. उसका पात्र अपने आस पास की सच्चाई के प्रति उदासीन है. उसके चरित्र में व्याप्त इस उदासीनता को उदहारणस्वरुप एक दृश्य में दिखाया गया है जब वो खाने के मेज़ पर रखे मांस के एक बड़े टुकड़े को अपने दोनों हाथों से उठाकर दांतों से खींच-खींच कर खाता है. कैमरे के सामने उसका यूँ मांस खाना वैसा है जैसे कोई बड़ा जानवर किसी छोटे जानवर का शिकार कर उसे खा जाता है. असल जीवन में भी बाउजी के लिए घर की औरतें मांस के टुकड़े सामान हैं, चाहे वो उसकी अपनी बहु बीना हो या घर में काम करने वाली हेल्प – दोनों ही उसका शिकार बनती हैं. बाउजी को कई दृश्यों में घर के आम बुजुर्ग की तरह दिखाया गया है, जो टीवी पर दिन भर जानवरों के संसार को देखते रहते हैं- खासकर शेर किस प्रकार हिरणी का शिकार करते हैं. बाउजी का किरदार एक बुजुर्ग है, जो एक नृशंश अपराधी है. यह किरदार दो मिथकों को तोड़ता है- एक मिथक यह कि कोई बुजुर्ग मात्र होने से कोई दर्शकों के आदर, समझदारी और दया का पात्र नहीं हो सकता है. दूसरा मिथक यह कि बुराई का प्रतीक कैमरे के सामने अपने शरीर से बलशाली और सबल नहीं दीखता है. बाउजी का पात्र व्हीलचेयर पर बैठा एक बुजुर्ग निर्बल पात्र है. उसके दिमाग में व्याप्त बुराई की खासियत यह है कि उसके लिए हिंसा, बुराई और अपराध सामान्य कृत्य हैं. उसका साधारण होना उसकी बुराई के साधारण होने की तरफ इशारा करते हैं. इतिहास के वास्तविक पात्र अईखमान और ब्रह्मदत्त और बाउजी के काल्पनिक पात्र में एक ही समानता है- उनके अंदर **'Banality of evil' ('बुराई की साधारणता')"** का होना है. तीनों पात्र अंतरात्मारहित अपराधी हैं- आम सामन्य शरीर में बसने वाली बुराई हैं, जो हम-सब की हीं तरह दिखती है.

'बुराई की साधारणता' से बचा जा सकता हैं, इसे साधारण न होने देने का प्रण लेकर. सोच-विचार, मानवता, सच्चाई और कल्पनाशक्ति के सकारात्मक मायने हमें ही ढूंढने होने, नहीं तो हमारे अंदर की बुराई खुद को साधारण बना लेने का बहुत दम रखती है.

सन्दर्भ:

1. Arendt, Hannah: *Eichmann in Jerusalem. A Report on the Banality of Evil.* The Viking Press: New York 1963.
2. 2019 *Article 15*. Director: Anubhav Sinha

3. 2020 *Pataal-Lok*. Director: Avinash Arun, Prosit Roy
4. 2020 *Mirzapur-2*. Dierector: Karan Anshuman, Puneet Krishn

Email: 007manjari@gmail.com
Mob no. 9968545053